इन समें खिजमत में, रहता था गरीब दास ।
खान सामा खिताब दीवान का, कहृया कलाम खास ॥९०॥

इस समय गरीबदास जी सब सुन्दर साथ के लिए भोजन बनाते थे । इसलिये श्री जी उन्हें प्यार से खानसामा कहकर पुकारते थे । सब सुन्दरसाथ उन्हें दीवान साहब कहते थे । आप श्री जी ने उन्हें प्यार से यह शोभा बख्शी थी ।

एह लालदास को, हुआ था हुकम ।
इसी वास्ते आगे को, रखता था कदम ॥९१॥

श्री लालदास जी को सब ग्रन्थों की जिम्मेदारी श्री जी ने सौंपी थी (अर्थात् प्रमाण खोज-खोज कर दिखाना), इसलिये श्री लालदास जी धर्म कार्य में सबसे आगे रहते थे ।

(प्रकरण ३७, चौपाई १८१८)

फेर श्री राज आए दिल्ली, आए मिले सब साथ ।
मास चार इत भये, फेर साथ के पकड़े हाथ ॥१॥

हरिद्वार से आप श्री जी साहिब दिल्ली आए और सब सुन्दरसाथ से मिले । चार महीने तक दाऊद पाण्डे की हवेली में रहे । उसके पश्चात् जागनी का कार्य आरम्भ किया ।

इत विचार करके, राखें एक तरफ सरूप दे ।
लड़ें छड़े होए के, देखें कैसा काम होवे जेह ॥२॥

फिर सब सुन्दरसाथ के साथ विचार-विमर्श किया कि सब महिला सुन्दरसाथ को किसी एकान्त जगह में छोड़कर औरंगजेब को पैगाम देने के वास्ते शरीयत से छड़े होकर जैसे भी सामना करना पड़ेगा, वैसे करेंगे ।

तब अनूप सहर को, सब साथ को ले चले ।
तहां एक हवेली लेय के, सब साथ को रखे ॥३॥

तब दिल्ली से अनूपशहर सब सुन्दरसाथ को साथ में लेकर गए तथा वहां एक हवेली लेकर सभी महिला सुन्दरसाथ को छोड़ दिया ।

इत रहत एक पाठक, अनूप सहर का चौधरी ।
दो दिन आया दीदार को, तिन सों चरचा करी ॥४॥

अनूपशहर का एक चौधरी पाठक वहां रहता था । वह दो दिन श्री जी के दर्शन और चर्चा सुनने के लिए आया । श्री जी ने जाग्रत बुद्धि के तारतम ज्ञान से उन्हें चर्चा सुनाई ।

Nijanand App

सीसा एक गुलाब का, आगे धराया तिन ।
उपली कछुक पेहेचान से, और न चीना किन ॥५॥

उसको कुछ पहचान हुई । उसने गुलाब का इत्रदान लाकर चरणों में भेंट किया । अन्य किसी ने उन्हें नहीं पहचाना ।

तहां साथ को राख के, फेर आये दिल्ली में ।
उतरे आय साहगंज में, आये बातें करी साथ से ॥६॥

वहां सुन्दरसाथ को छोड़कर श्री जी दिल्ली वापस आए तथा शाहगंज मुहल्ले में दिल्ली के सुन्दरसाथ से विचार-विमर्श किया ।

साथ जो दिल्ली का, आये मिला सब धाए ।
तिन सबको परियान की, बातें करी बनाए ॥७॥

दिल्ली के सब सुन्दरसाथ सुनते ही तुरन्त श्री जी के दर्शन के लिए आए । औरंगजेब तक पैगाम देने के लिए श्री जी ने सबके साथ विचार-विमर्श किया ।

तहां सेती पाती लिखी, बिहारी जी ऊपर ।
एक सकस चलाया, सारी दे खबर ॥८॥

दिल्ली से फिर बिहारी जी को नवतनपुरी के लिए पत्र लिखा जिसमें सूरत से लेकर हरिद्वार तक का सारा प्रसंग लिख कर भेजा ।

फेर इहां से चले, आए लाल दरवाजे में ।
साथ सबे मिल के, परियान किया तिन से ॥९॥

फिर शाहगंज मुहल्ले को छोड़कर लाल दरवाजे आ गए और सब सुन्दरसाथ से मिलकर विचार-विमर्श किया कि एक वकील को बुलाकर उसके माध्यम से यह पाती औरंगजेब तक भेजी जाए ।

आसाजीत बुलाइया, सुनाए सब कलाम ।
सिफत जो तिन में, महम्मद अलेहु सलाम ॥१०॥

आसाजीत वकील को बुलाया गया और कुरान के २२ प्रश्नों वाली पाती की सारी हकीकत उन्हें सुनाई गई जिसमें मुहम्मद अलैहि इस्लाम की सिफत थी ।

नबी और नारायण की, कछु सुनाई पहिचान ।
तब ऐ बात सुनके, खड़ भड़ पड़ी ईमान ॥११॥

और उसे नबी और नारायण की श्री जी ने पहचान कराई । उसे सुनकर वह घबरा गया कि ये हिन्दुओं के भगवान को छुड़ा कर महंमद की महिमा अधिक बताते हैं ।

Nijanand App

प्रमाण : नबी और नारायन की, कछुक कहूं पटंतर ।
रसूल कहे नूरजमाल की, नहीं नारायन गम अछर ॥

सनंध प्र० २५ चौ० ११

हिन्दुओं के तरफ की, कछु न रही टौर ।
इनमें तो कछु न रहया, बड़ा होत है जोर ॥१२॥

ऐसा करने से तो हिन्दुओं का कोई ठिकाना ही नही रहेगा । इससे तो हिन्दू धर्म पर बड़ा अत्याचार होता है ।

मैं देखत हों तुमको, बिन सिर के आदमी ।
कानों तो सुने हते, तुमको देखे इन जिमी ॥१३॥

तब आसाजीत ने कहा, हमने सुना तो था कि कलियुग में ऐसे ब्रह्ममुनि आयेंगे जो बिना सिर के होंगे अर्थात् जो लोक-लाज, मान-अपमान को छोड़कर अपने धनी के नाम पर बिना किसी संकोच के मर-मिटने को तैयार होंगे । पर मैं उसको मानता नही था लेकिन आज मैंने दिल्ली में देख लिया है ।

अमल औरंगजेब का, और सरियत का अमल ।
तिनसों तुम लड़त हो, इत मोहे न पड़े कल ॥१४॥

औरंगजेब का राज्य है तथा शरीयत का हिन्दुओं पर अत्याचारी दौर है । उनसे आप लोग लड़ते हैं यह समझना मेरी अक्ल से बाहर है ।

तब विचार करके, छोड़ दिया इनको ।
विचार अपने साथ में, करे आपुस मों ॥१५॥

तब श्री जी ने आसाजीत वकील को छोड़ दिया तथा अपने ही सुन्दरसाथ से मिलकर विचार किया कि कोई उसका निकटतम साथी हो तो उससे मिला जाए ।

कौन नजीकी इनका, करें तिनसे मिलाप ।
कहें हकीकत आपनी, इनें छूट जाए सब ताप ॥१६॥

यह खोज करनी चाहिये कि बादशाह का नजदीकी अधिकारी कौन है उससे मिलकर अपनी हकीकत उसको समझायी जाय । फिर वह यदि औरंगजेब के पास जाकर ईमाम मेंहदी की पहचान कराएं तो औरंगजेब भी झूटे राज्य का अभिमान छोड़ कर पारब्रह्म की पहचान कर लेगा ।

Nijanand App

ऐ विचार करके, जाए मिले सेख सलेमान।
तिनसों कहा हमको, मिलाओ सुलतान ॥१७॥

यह विचार करके शेख सुलेमान से मुलाकात की गई और उससे यह कहा गया कि तुम किसी भी कीमत पर हमें औरंगजेब से मिलाओ।

इन मिलाप श्री राज सों, किया था बेर दोए।
इनके दिल में कुफर, कीमियां मांगे सोए ॥१८॥

शेख सुलेमान पहले भी दो बार स्वामी जी के दर्शन कर चुका था। उसके दिल में बड़ी कृतघ्नता थी। वह कुछ चमत्कारिक शक्ति चाहता था अर्थात् लोहे से सोना बनाने की कला जानना चाहता था।

इनको एक फकीर की, बात कही समझाए।
बैठा फकीर पहाड़ में, तिनके भेजे हम आए ॥१९॥

वह सुन्दरसाथ जो उससे मिलने गये थे उन्होंने कहा कि हमको एक फकीर ने, जो पहाड़ में रहता है, इस कार्य के लिए भेजा है तथा यह भी बताया कि वह सबकी मनोकामना पूर्ण करता है।

तुम्हारे दिल के बीच में, जेता कोई मनोरथ।
सो सारे तुम्हारे, पूरे करें अरथ ॥२०॥

तुम्हारे दिल के अन्दर जो कुछ भी चाहना है वह हम सब कुछ पूरी कर देंगे। तुम हमें औरंगजेब से मिला दो।

एक दीन सब होवहीं, भागे सबरो ब्रोध।
आपुस में लड़ मरत हैं, सो मिट जावे क्रोध ॥२१॥

यदि तुम हमें औरंगजेब से मिला दोगे तो हिन्दू-मुसलमान जो आपस में मर मिट रहे हैं, उनका आपस का सब बैर एवं क्रोध खत्म हो जायेगा।

और सब तुम्हारे दुस्मन, आपे होवे जेर।
तुम्हारा सिर ऊंचा होवे, जाय लगे सिर मेर ॥२२॥

तुम्हारे जितने भी दुश्मन हैं वे स्वयं तुम्हारे चरणों में आ जायेंगे। इस कार्य को करने से इस्लाम धर्म के अन्दर तुम्हारा सिर ऊंचा होगा तथा तुम सबसे श्रेष्ठ माने जाओगे।

और जेता कोई कीमियांगर, करने वाले धात।
ते कदम तुम्हारे पकड़ें, आधीन हो करें बात ॥२३॥

जितने भी लोहे से सोना बनाने वाले कीमियागार हैं वे सब भी तुम्हारे कदमों में आकर खड़े रहेंगे तथा तुम्हारी आधीनता में बातें करेंगे।

Nijanand App

और डर सुलतान के, रहे न कोई कित ।
तुमको खुदा करे रसूल का, दीदार होवे इत ।।२४।।

और जो हिन्दू आदि जनता औरंगजेब से डरती है और छिप-छिप कर रहती है । अब कोई भी औरंगजेब से डर कर छिपेगा नही और हम अल्लाह तआला के हुकम से रसूल साहब का यहीं पर दीदार करा देंगे।

जब ए बात लिख दई, तब डरा सेख सलेमान ।
तब इत की पातसाही, कौन करे सुलतान ।।२५।।

शेख सुलेमान ने यह कहा कि तुम यह बात लिख कर दो तो मैं आपको औरंगजेब से मिला दूंगा लेकिन जब ये बात लिख कर दी तब शेख सुलेमान डर गया और घबरा गया कि यदि औरंगजेब को आखरूल जमां ईमाम मेंहदी की पहचान हो जायेगी तो फिर वह उनकी खिदमत में चला जायेगा तो दिल्ली का बादशाह कौन बनेगा ?

तब जबाब इनको दिया, इन फकीर की पातसाही ।
हकें दई दीन की, जाहिर की न दिखाई ।।२६।।

तब शेख सुलेमान को मोमिनों ने जवाब दिया कि जो अल्लाह तआला के फकीर होते है, वे दीन के बादशाह होते हैं, मुर्दार दुनियां के नहीं, इसलिये तुम घबराओ नहीं । हकताला ने इनको दीन की बादशाही दी है । वे दुनियां को लेकर क्या करेंगे ?

जो कोई होवेगा फकीर, हक ताला की तरफ ।
सो दुनियां मुरदार की, थूक ना काढ़े हरफ ।।२७।।

जो अल्लाह तआला के फकीर होते हैं वे मुर्दार दुनियां की ओर देखते ही नही । जिस प्रकार थूक कर उसकी तरफ देखा नही जाता, उसी तरह फकीर भी दुनियां को छोड़ने के पश्चात् उसकी तरफ नही देखते।

ऐह बात सुन के, देहेसत भई दिल में ।
ऐ बात बड़ी बुजरक, क्या मालूम होए मुझसे ।।२८।।

इस बात को सुनकर वह दिल में बहुत डर गया कि यह तो बहुत ऊंचे महत्व की बात है । न जाने, यदि कोई मुझसे भूल हो गई तो मेरा क्या होगा ।

महामत कहें ए मोमिनों, याद करो हजरत ।
जो लड़ाई तुम करी, कायम करने क्यामत ।।२९।।

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! आप अपने धाम के धनी इमाम मेंहदी को याद कीजिए, जिनकी अपार मेहर से कयामत के समय को जाहिर करने का धर्मयुद्ध छेड़ा गया था ।

प्रकरण ३८, चौपाई १८४७

Nijanand App